अहले हदीस

बर्रे सग़ीर में कब से?

55

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

सब तारीफ़े अल्लाह तआला के लिये हैं जो सारे जहानों का पालनहार है। हम उसी की तारीफ करते हैं और उसी से मदद और माफी चाहते हैं। अल्लाह की लातादाद सलामती, रहमतें और बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल. पर, आप की आल व औलाद और असहाब रज़ि. पर। व बअद!

अहले हदीस– यह नाम दो लफ्ज़ों 'अहल व हदीस'' का मजमूआ है। अहल का मतलब होता है 'वाले' और हदीस नाम है 'अल्लाह के कलाम (कुरआन) का और अल्लाह के रसूल सल्लललाहु अलैहि व सल्लम के फ़रमान का। पस! अहले हदीस के मआनी हुए 'कुरआन व हदीस वाले'।

कोई भी नाम तमीज़ व पहचान के लिए होता है। सहाबा किराम रज़ि. ताबईन रह. और तबअ ताबईन रह.के ज़माने में कोई तक़लीदी मज़हब न था। सारे मुसलमान अहले हदीस ही थे। कोई हनफ़ी, मालिकी, शाफ़ई या हम्बली न था। बल्कि खुद ये चारों इमाम इमामत के मर्तबे के साथ पहली सदी हिजरी में दुनिया में मौजूद न थे। सभी मुसलमान कुरआन व हदीस पर अमल करते थे। इन्हीं पर अमल करने की वसीयत आप सल्ल. ने अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी दौर में फ़रमाई थी। इसीलिए अबु सईद खुदरी रज़ि. जब किसी नौजवान तालिबे हदीस को देखते तो फ़रमाते ''तुम्हें अल्लाह के रसूल सल्ल. की वसीयत मुबारक हो! हमें आप सल्ल. फरमा गए हैं कि तुम्हारे लिए मजलिसों में कुशादगी करें और तुम्हें हदीस का दर्स दें। तुम हमारे खलीफ़ा हो और हमारे बाद तुम ही अहले हदीस हो।'' (शर्फ़ लिल खतीब)

एक अरसे बाद जब मुज्तहिदीन के अक़वाल व फ़तावों को हुज्जत माना जाने लगा और मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब की बुनियादें क़ायम हो गई तो जिन लोगों ने पहले की तरह सिर्फ़ कुरआन व हदीस से दीन हासिल करना अपना दस्तूर रखा और रावियाने हदीस की रिवायत और उनकी दरायत में फ़र्क़ किया। साथ ही अपने अमल व एतेक़ाद की बुनियाद सिर्फ़ कुरआन व सही अहादीस पर रखी वो ' अहले हदीस, असहाबे हदीस अहले असर या मुहद्दिसीन कहलाएं। बाक़ी लोग या तो अपने–अपने इमाम व मुक्तदा की तरफ़ मन्सूब हुए या उस मसअले की तरफ़ जिसमें उन्होंने अहले हदीसों से इख़्तिलाफ़ किया था। जैसे कदरिया 'तक़दीर का इन्कार करने की वजह से 'जबरिया' जब्र महज़ के क़ायल होने की वजह से और 'मुरजिया' आमाल को ईमान से अलग करने और सिर्फ़ ईमान पर निजात की उम्मीद रखने से।

जमाअते अहले हदीस के इमाम, मुरशिद व क़ाइद सिर्फ़ अल्लाह के रसूल सल्ल. है। आप सल्ल. के ज़माने से यह जमाअत मौजूद है। जैसा कि आप सल्ल. का इर्शाद है ''मेरी उम्मत में से एक गिरोह हमेशा हक़ (सही दीन) पर क़ायम रहेगा। उसको छोड़ने वाला या उस की मुख़ालिफ़त करने वाला उस (गिरोह) का कुछ न बिगाड़ सकेगा। यहां तक कि अल्लाह का हुक्म (क़यामत) आ जाए और वह इसी (सही दीन) पर होगा।'' (बुख़ारी–3641,मुस्लिम–5247,अहमद–18315)

मौलाना मोहम्मद इदरीस कांधलवीने अपने रिसाले ''इज्तेहाद व तक़लीद'' में लिखा कि ''अहले हदीस तो तमाम सहाबा किराम रज़ि. थे। इमाम अबु हनीफ़ा रह. के शागिर्दे ख़ास काज़ी अबु युसुफ़ रह. एक दिन बाहर निकले तो अहले हदीस को देखकर फ़रमाया ''ज़मीन में तुम से बेहतर कोई नहीं क्योंकि तुम सिर्फ अल्लाह के रसूल सल्ल. की

Please purchase

अहादीस सुनते ओर सीखते हो।'' और इमाम मोहम्मद बिन हसन शैबानी रह. ने अपनी किताब ''मौत्ता'' में लिखा कि ''इमाम इब्ने शहाब ज़हरी मदीना में अहले हदीसों के नज़दीक सब से ज़्यादा आलिम थे।

मालूम हुआ कि खैरूल कुरून में न सिर्फ़ यह कि अहले हदीस मौजूद थे बल्कि अक्सरियत भी उन्हीं की थी। अब सवाल यह है कि ''बरें सग़ीर'' पाक व हिन्द में अहले हदीस कब आए? क्या बर्रे सग़ीर में यह जमाअत अग्रेज़ी दौर की या अग्रेज़ों की पैदावार है? क्या ढ़ाई–तीन सौ साल पहले यहां इनका कोई वजूद था? या इतना अरसा पहले यहां इनका कोई मदरसा या मस्जिद थी? तो आइये–तरतीबवार जानते हैं कि बरें सग़ीर में अहले हदीस कब से है?

बर्रे सग़ीर में अहले हदीस का पहला कारवां–

उमर रज़ि. के दौरे खिलाफ़त में–अल्लाह के रसूल सल्ल. की वफ़ात के चार साल बाद ही सहाबा किराम रज़ि. की शक्ल में अहले हदीसों का पहला कारवां यहां आया। तारीख़ कई नामों को तो महफ़ूज न रख सकी। फिर भी इन 12 सहाबा रज़ि. के नाम तारीख़ से हमे मिलते है।

1. उसमान बिन अबुल्आस सक़फ़ी रज़ि.– 15 हिजरी में एक बेहरी बेड़ा लेकर थाना व भरूंच के बन्दरगाह तक आए और उसे फ़त्ह किया। लेकिन यहां क़ब्ज़ा बरक़रार न रख सके। वापिस ओमान चले गए जहां के आप गवर्नर थे।

2. हकम बिन अबुल्आस सक़फ़ी रज़ि.– इन्होंने अपने बड़े भाई उस्मान रज़ि. के हुक्म से थाना,मरूंच दाबेल व मकरान के इलाकों में जिहाद किया ओर उन्हें जीता।

3. मुग़ीरा बिन अबुल्आस सक़फ़ी रज़ि.– अपने दोनों भाईयों (उस्मान व हकम) के साथ इस काफ़िले में शरीक थे। निहायत समझदार, अक्लमंद और दूर रस निगाह रखने वाले शख़्स थे। लोग आप की बहुत इज़्ज़त व एहतराम करते थे।

4. रबीअ बिन ज़ियाद हारसी रज़ि.–17 हिजरी में ज़ालिक, काबुल,किरमान और मकरान के इलाकों में जिहाद किया उस वक़्त ये इलाके सिन्ध व बिलोचिस्तान के हिस्से थे।

5. हकम बिन अम्र ग़फ़ारी रज़ि.– 17 हिजरी में मकरान के वाली बनाए गए। 23 हिजरी में पूरे मकरान को फ़त्ह किया। 57 हिजरी में खुरासान में वफ़ात हुई।

6. अब्दुल्ला बिन अब्दुल्लाह अन्सारी रज़ि.– 23 हिजरी में मकरान आए। हकम बिन अम्र ग़फ़ारी रज़ि. के साथ जिहाद में शिरकत की और बहादुरी के जौहर दिखाए।

7. सहल बिन अदी अन्सारी रज़ि.– बदरी सहाबा में से हैं। 23 हिजरी में मकरान आए। बिलोचिस्तान के कई इलाकों को फ़त्ह किया।

8. शहाब बिन महारिक़ तमीमी रज़ि.– 17 हिजरी में हकम बिन अम्र ग़फ़ारी रज़ि. के साथ मकरान के जिहाद में शरीक थे।

9. सहार बिन अब्बास रज़ि.– मकरान के जिहाद में शरीक थे। आप रज़ि. ही मकरान की फ़त्ह की ख़बर लेकर उमर रज़ि. के पास गए थे।

10. आसिम बिन अम्र तमीमी रज़ि.– सजिस्तान के क़रीब का इलाक़ा फ़त्ह किया जो तब सिन्ध का हिस्सा था।

11. अब्दुल्लाह बिन अमीर अशजई रज़ि.– 23 हिजरी में सजिस्तान की जंग में आसिम बिन अम्र रज़ि. के साथ थे।

12. नसीर बिन दीसम अजली रज़ि.– 23 हिजरी में बिलोचिस्तान में जिहाद किया। फ़ौज के एक दस्ते की कमान आप के पास थी।

उस्मान बिन अफ़्आन रज़ि. के दौरे ख़िलाफ़त में

मुहर्रम 24 हिजरी से ज़िल्हज्ज 35 हिजरी के बीच जो सहाबा किराम रज़ि. यहां आए तारीख़ उनमें से सिर्फ़ इन 5 के नाम महफ़ूज रख सकी।

1. हकीम बिन जुब्ला अब्दी रज़ि.– आप सैलानी बनकर बर्रे सगीर के कुछ इलाक़ों में

'e-PDF Converter and Creator' on http://...

घूमें और वहां के हालात की ख़बर उस्मान रज़ि. तह पहुंचाई।

2. उबैदुल्लाह बिन मुअमर तीमी रज़ि.– मकरान व सिन्ध में जिहाद किया। मफ़तूहा–इलाकों के गर्वनर बनाए गए।

3. अमीर बिन उस्मान बिन सअद रज़ि.– 29 हिजरी में मकरान के अमीर बनाए गए।

4. मुजाशेअ बिन मसऊद सल्मी रज़ि.– काबुल मं इस्लामी फ़ौज के एक दस्ते की क़यादत की और बाद में बिलोचिस्तान में सजिस्तान के गर्वनर रहे। गुजरात के काठियावाड़ और राजस्थान का कुछ इलाक़ा फ़त्ह किया।

अली रज़ि. के दौरे खिलाफ़त में

ज़िल्हज्जा 35 हिजरी से रमज़ान 40 हिजरी के बीच जो सहाबा रज़ि. यहां आए। उनमें से इन 3 के नाम हमें मिलते है–

1. ख़रीत बिन राशिद सामी रज़ि.– उमर रज़ि. के दौरे खिलाफ़त में फारस के एक इलाके के वाली थे। 37 हिजरी में अली रज़ि. के हुक्म से मकरान आए।

2. अब्दुल्लाह बिन सुवैद तमीमी रज़ि.– सिन्ध के एक जिहाद में हिस्सा लिया। बहुत अच्छे शायर व अदीब थे।

3. कलीब बिन अबुवायल रज़ि.– आप ने बर्रे सग़ीर के एक इलाक़े में एक ऐसा पेड़ देखा जिसके सुर्ख़ रंग के एक फूल पर सफ़ेद हुरूफ में ''मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'' लिखा था।

मुआविया रज़ि. का दौरे ख़िलाफ़त

आप रज़ि. हज़रात अली रज़ि. की शहादत के 6 माह बाद 40 हिजरी में खलीफ़ा हुए और 60 हिजरी तक रहें। आपके दौरे ख़िलाफ़त में ये 4 सहाबा रज़ि. बर्रे सग़ीर आए।

1. मुहलब बिन अबि सफ़राह रज़ि.– 44 हिजरी में एक फ़ौजी की हैसियत से सिन्ध के एक शहर क़न्दाबील में जिहाद किया। खुरासान के गवर्नर भी रहें। 83 हिजरी में फ़ौत हुए।

2. अब्दुल्लाह बिन सवार अब्दी रज़ि.– 43 हिज़री में एक फ़ौज लेकर रनकछ और क़लात के इलाकों में जिहाद किया। 47 हिजरी में एक तुर्की के हाथों क़लात में शहीद हुए।

3.यासिर बिन सवार अब्दी रज़ि.– 43 हिजरी में अपने भाई अब्दुल्लाह के साथ यहां आए।

4. सनान बिन सलमा हज़ली रज़ि– 50 हिजरी में एक फ़ौज के अमीर बनकर आए और फ़तूहात का दायरा दूर तक फैलाया। 94 हिजरी में फौत हुए।

यज़ीद रह. का ज़माना ए हुकूमत

60 हिजरी में अपने वालिद मुआविया रज़ि. की वफ़ात के बाद हुकूमत की बाग डोर संभाली। 3 साल 8 माह हुकूमत की 10 रबीउल अव्वल 64 हिजरी को फ़ौत हुए। इनके दौरे हुकूमत में यह एक सहाबी ए रसूल बर्रे सग़ीर आए–

मन्ज़र जारूद अब्दी रज़ि.– 60 हिज़री में आए और बूक़ान व क़लात इलाकों में जिहाद किया और कामयाबी हासिल की। 62 हिजरी में सिन्ध में मफ़तूहा इलाकों के गवर्नर रहे। फिर यही आप का इन्तेकाल हुआ।

बर्रे सग़ीर में अहले हदीसों का दूसरा कारवां

इस दूसरे कारवां में सहाबा किराम रज़ि. के शार्गिद ताबईन रह. यहां आए। इनमें कुछ मुख़्तालिफ़ औक़ात में जिहाद के लिए यहां आए तो कुछ दीने इस्लाम की तब्लीग़ व इशाअत के लिए तशरीफ़ लाए। ये कुल 42 हज़रात हैं जिनके नाम हमें मिलते है:–

1. इब्ने उसैद रह.– इन्हें अब्दुल मलिक बिन मरवान रह. ने सिन्ध का वाली बना कर भेजा । यह यहां हदीस का दर्स भी देते रहे।

to remove this message.

2. अबु शैअबा जौहरी रह.– अनस रज़ि. के शार्गिद हैं। दाबेल के गर्वनर बनाए गए।
3. तागि़र बिन ज़ौअर रह.– आपको अली रजि. ने इस्लामी लश्कर का अमीर बनाकर सिन्ध भेजा था।
4. हातिम बिन क़बीसा रह.– आपने लम्बे अरसे तक सिन्ध में जिहाद किया।
5. हकम बिन मन्जर अब्दी रह.– सिन्ध और उसके आस–पास के इलाकों में जिहाद किया।
6. राशिद बिन अम्र अज़्दी रह.– उस्मान रज़ि. के दौरे खिलाफ़त में सिन्ध में जिहाद किया। 42 हिजरी में मुआविया रज़ि. ने इन्हें सिन्ध का गवर्नर बनाया।
7. जायदा बिन हवारी रह.– फ़त्ह सिन्ध के मौक़े पर मुहम्मद बिन क़ासिम रह. के साथ थे।
8. ज़ियादा बिन हवारी रह.– मुहम्मद बिन क़ासिम रह. के क़ाबिले एतेमाद साथी थे।
9. ज़ियाद बिन रबाह कैसी रह.– अबु हुैररा रज़ि. के शागिर्दों में से हैं। राजा दाहिर का सिर इराक़ लेकर गए थे।
10. हकम बिन अवाना कल्बी रह.– मुहम्मद बिन क़ासिम रह. के साथ 93 हिजरी में सिन्ध आए। जिहादी सरगर्मियों के अलावा लोगों को कुरआन व हदीस का दर्स भी देते रहें।
11. मुआविया बिन कुरहा मुज़नी रह.– सिन्ध में काफ़ी अरसे तक रहे।
12. मकहूल बिन अब्दुल्लाह रह.–सिन्ध व शाम के इलाकों में काफ़ी अरसे तक रहे।
13. अब्दुर्रहमान बिन अब्बास रह.–83 हिजरी में सिन्घ आए। अबु हुरैरा रज़ि. के शार्गिद है।
14. अब्दुर्रहमान सिन्धी रह.–अनस रज़ि. के शार्गिद है। इमाम बुख़ारी रह. ने इनसे एक हदीस रिवायत की है।
15. क़तन बिन मुदरक कलाबी रह.–93 हिजरी में सिन्घ आए और काफ़ी अरसा यहां रहे।
16. कैस बिन सअलबा रह.–इब्ने मसऊद रज़ि. के शार्गिद है। दाबेल सिन्घ में जिहाद किया।
17. कहमस बिन हसन बसरी रह.– हसन बसरी रह. के बेटे है। सिन्घ के जिहाद में शरीक थें।
18. यज़ीद बिन अबु कबशा रह.–अबु दर्दा रज़ि. के शार्गिद है। 96 हिजरी में सिन्घ के वाली थे।
19. मूसा सैलानी रह.–अनस रज़ि. के शार्गिद है।96 हिजरी में सिन्घ के वाली थें।
20. मूसा बिन याकूब सक़फ़ी रह.– 93 हिजरी में सिन्घ की फ़त्ह के बाद यहां के क़ाज़ी और खत़ीब बनाए गए।
21. अब्दुर्रहमान कुन्दी रह.– 80 हिजरी में सजिस्तान के गवर्नर बनाकर भेजे गए।
22. अब्दुर्रहमान बेलगानी रह.– उमर रज़ि. के आज़ाद कर्दा गुलाम हैं। उस्मान रज़ि. इब्ने उमर रज़ि. इब्ने अब्बास रज़ि., सईद बिन ज़ैद रज़ि. इब्ने उम्र रज़ि. और मुआविया रज़ि. से अहादीस बयान की।
23. उमर बिन उबैदुल्लाह क़रशी रह.– अरमाइल जो अब क़लात में है जिहाद किया और अब्दुर्रहमान बिन सुमराह रज़ि. के साथ क़ाबुल का इलाक़ा फ़त्ह किया।
24. शिमर बिन अतिया असअदी रह.– 93 हिजरी में सिन्ध के जिहाद में शामिल थे।
25. सईद बिन असलम कलाबी रह.– सिन्ध के वाली बनाए गए। रिहाइश मकरान में थी।
26. सईद बिन कन्दरी कशीरी रह.– शहादते उस्मान रज़ि. के वक्त मकरान के अमीर

थे।

27. सअद बिन हिशाम अन्सारी रह.– अनस रज़ि. के चचेर भाई हैं। मकरान के अमीर थे।

28. हुबाब बिन फुज़ाला ज़हली रह.– हिन्द आने वाले लश्कर में थे। अनस रज़ि. से मुलाक़ात थी।

29. अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्ला रह.– मकरान के जिहाद में हिस्सा लिया।

30. हारिस बिन मुराह अब्दी रह.– 38 हिजरी में आए और 42 हिजरी में क़लात में फ़ौत हुए।

31. हारिस बेलमानी रह. – इब्ने उमर रज़ि. से हदीस की रिवायत की।

32. अय्युब बिन ज़ैद हिलाली रह.– सिन्ध, मकरान और बामयान में हिजाज़ के ज़माने में जिहाद किया।

33. हुर बिन हुर बाहली रह.– इब्ने ज़ियाद ने एक दस्ता देकर जिहाद के लिए हिन्द भेजा था।

34. अबाद बिन ज़ियाद रह.– 53 हिजरी में सजिस्तान के गवर्नर बने। अफ़गानिस्तान में जिहाद किया।

35. यज़ीद बिन मुफ़रग़ रह.– अबाद बिन ज़ियाद के साथ अफ़गानिस्तान में जिहाद किया।

36. रबीअ बिन सबीह बसरी रह.– अब्बासी ख़लीफ़ा मेहदी के वक़्त 159 हिजरी में गुज़रात के इलाके में जिहाद किया।

37. मुजाआ बिन सअर तमीमी रह.– मकरान में जिहाद किया। सिन्ध के गवर्नर रहे।

38. अतिया बिन सअद ऊफ़ी रह.– जिहादे सिन्ध और फ़त्ह मुल्तान के वक़्त मुहम्मद बिन क़ासिम रह. के साथ थे।

39. हसन बसरी रह.– काबुल, ख़ुरासान और सजिस्तान में जिहाद किया।

40. सैफ़ी बिन फ़सील शैबानी रह.– उस्मान रज़ि. के वक़्त में सिन्ध में जिहाद किया।

41. अबु सलमा जुती रह.– अली रज़ि. के वक़्त में बसरा में बैतुलमाल के ख़ज़ान्ची थे बर्रेसग़ीर के उन जाट घरानों से तअल्लुक था जो अरब में जा बसे थे।

अहले हदीसों का तीसरा कारवां

42. मुहम्मद बिन क़ासिम रह.– बर्रेसग़ीर में तीसरा कारवां 93 हिजरी में मुहम्मद बिन क़ासिम रह. की सिपहसालारी में आया। ये क़रीब 20 हज़ार लोग थे जो सिन्ध आए सिन्ध व हिन्द का बहुत सा इलाक़ा इन्होंने फ़त्ह किया और यहां ''कालल्लाह व कालर्रसूल'' यानि ''कुरआन व हदीस'' की सदाएं बुलन्द की। इन्हीं की तब्लीग़ व प्रचार किया। इनकी अक्सरियत यहीं बस गई थी।

चौथा कारवां–तबअ ताबईन रह.

अब तक अहले हदीसों के वो तीन कारवां हमारी नज़रों से गुज़रे जो बर्रे सग़ीर में आए और यहां ख़ालिस कुरआन व हदीस की तब्लीग़ की। अब इस बा बरकत अहद का चौथा कारवां देखिए जो 18 तबअ ताबईन रह. पर मुश्तमिल है। ये सभी बुजुर्ग सहाबा किराम रज़ि. के शागिर्दो (ताबईन रह.) के शागिर्द हैं। ये सब और इनके साथ आने वाले सभी लोग किताब व सुन्नत के पैरूकार थे। किसी तक़्लीदी मज़हब से इनका भी कोई सरोकर न था बल्कि इनके वक़्त तक तक़्लीदी फ़िक्ही मज़ाहिब का वजूद भी न था।

1. इस्राईल बिन मूसा बसरी रह.–हसन बसरी रह. के शागिर्द है।

2. कुर्ज़ बिन अबि कुर्ज़ अब्दी रह.– 45 हिजरी में क़लात के जिहाद में शरीक थे। सक़ा रावी हैं। निहायत इबादत गुज़ार मुहद्दिस थे।

3. मौअला बिन राशिद बसरी रह.– 50 हिजरी में कलात आए और जिहाद किया।

4. जुनैद बिन अम्र मक्की रह.– 93 हिजरी में आए। भंरूच में जिहाद किया।

5. मुहम्मद बिन ज़ैद अब्दी रह.– 93 हिजरी में सिन्ध आए और जिहाद में शिरकत की।

6. मुहम्मद बिन गज़ान कल्बी रह.– 126 हिजरी में उमर बिन मुहम्मद बिन क़ासिम के वक्त में सिन्ध आए।

7. अबु उऐना अज़्दी रह.– यज़ीद बिन अब्दुल मलिक के ज़माने में सिन्ध आए थे।

8. सिन्धी बिन शमास बसरी रह.–काफ़ी अरसा सिन्ध में रहे फिर बसरा चले गए।

9. अब्दुर्रहीम सिन्धी रह.– वालिद 93 हिजरी में सिन्ध में रहे फिर बसरा चले गए।

10. अब्दुर्रहमान बिन सिन्धी रह.– सिन्ध में पैदा हुए। इल्म दमिश्क़ में हासिल किया।

11. अम्र बिन उबैद सिन्धी रह.– सिन्ध में पैदा हुए। बाद में बसरा चले गए।

12. फ़त्ह बिन अब्दुल्लाह रह.– सिन्ध में पैदा हुए। बहुत परहेज़गार शख़्स थे।

13.क़ैस बिन बसर बसरी रह.– दादा सहाबी ए रसूल सल्ल. थे। सिन्ध में पैदा हुए।

14. अबु मअशर मदनी रह.– मुहद्दिस थे। खलीफ़ा मैहदी 160 हिजरी में अपने साथ इराक ले गया था। 170 हिजरी में फ़ौत हुए। नमाज़े जनाज़ा हारून रशीद ने पढ़ाई।

15. मुहम्मद बिन इब्राहीम रह.– बैलमान में पैदा हुए। कई हदीसें रिवायत की।

16. मुहम्मद बिन हारिस बेलमानी रह.– बैलमान में रहे। अपने वालिद से हदीसें बयान की।

17. यज़ीद बिन अब्दुल्ला क़रशी रह. सिन्ध में पैदा हुए सुफ़यान सौरी और इब्ने जरीज रह. से हदीसें बयान की।

18. अब्दुर्रहमान बिन अम्र औज़ाई रह. – यह इमाम औज़ाई रह. हैं। इमामुल हिन्द व शाम कहे जाते है। सिन्ध से तअल्लुक़ था। यहां क़ैद भी रहे।

ये हैं अहले हदीस के वो चार कारवां जिन्होंने इस्लाम के बिल्कुल शुरूआती दौर में बर्रे सग़ीर (हिन्द व पाक) में क़दम रखा। ये कारवां सहाबा किराम रज़ि. ताबईन रह. और तबअ ताबईन रह. पर मुश्तमल है। यही वो हज़रात है जिनकी कोशिशों व मेहनत से आप सल्ल. की अहादीसे पाक का ज़खीरा यहां आया। उस ज़माने में मसाजिद भी इन्हीं की थी और मदरसे भी इन्ही के थे।

बाद में जैसे–जैसे वक्त गुज़रा लोग सही दीन से दूर होते गये और मुस्लिम बादशाहों की मेहरबानी से तकलीदी मज़हब फैलता गया। लेकिन अल्लाह की मेहरबानी से कम तादाद में ही सही अहले हदीस मौजूद रहें। इसी लिए मौलाना मौदूदी साहब ने रसाइल व मसाइल जिल्द 1, सफ़ा 155, पर एक सवाल का जवाब देते हुए लिखा के बर्रे सग़ीर में अहले हदीस नये नही है, बल्के अइम्मा अर्बआ के जमाने से है। इन हकाइक के बावजूद किसी शख़्स, जमात या गिरोह का अहले हदीसो को अंग्रेजी दोर की पेदावार कहना चिलचिलाती धूप में सूरज का इन्कार करने जैसा है।

यह फोल्डर मुहम्मद इसहाक़ भही साहब की किताब ''बर्रे सग़ीर में अहले हदीस की आमद'' से तैयार किया गया है। जिसका माखज़ तबक़ात इब्ने सअद, तारीख़तबरी, अल असाबा, तहज़ीब अल तहज़ीब, लिसानुल्मीज़ान, अल इस्तीआब और अल बिदाया वन निहाया वग़ैरह हैं। जिन हज़रात को तफ़सील मतलूब हो वोह इस किताब की तरफ़ रूजुअ करें।

अल्लाह से दुआ है कि वह हम सभी को अपने सही दीन पर चलाए और बेजा तअस्सुब से बचाए। आमीन!

आपका दीनी भाई

मुहम्मद सईद

मो. 9214836639

दिनांक 25/12/2012